भारत के स्वातंत्र संग्राम में सामाजिक क्षेत्र पर सावित्रीबाई फुले का योगदान

Lakhdhirbhai D khuman
Department of history (M.A sem-4)
Maharaja Krishnakumarsinhji Bhavnagar, University,
Bhavnagar.
Mo-8140561760
khumanlakhdhir26@gmail.com

1.प्रस्तावना

सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका ही नहीं बल्कि वे एक अच्छी कवियत्री, अध्यापिका,समाज सेविका और पहेली शिक्षाविद भी थी ! इसके अलावा उन्हें महिलाओं की मुक्तिदाता भी कहा जाता है ! इन्होंने अपना पूरा जीवन के महिलाओं को शिक्षित करने में और उनका हक दिलवाने में लगा दिया ! महिलाओं को शिक्षा दिलवाने के लिए उन्हें काफी संघर्षों का भी सामना करना पड़ा लेकिन वे हार नहीं मानी और बिना धैर्य खोए और पूरे आत्मविश्वास के साथ डटी रही और सफलता हासिल की !

सावित्रीबाई फुले का जिस समय जन्म हुआ वह शुद्रो अतिशिद्रो के साथ भारतीय समाज में घोर भेदभाव , हिंचा , और अत्याचार का समय था ! मनिस्मुति के आधार पर ब्रामन को हिंदू समाज में वर्ग , जाति और वर्णभेद की भावना के कारण श्रेष्ठ और पूज्य माना जाता था ! उन्होंने समाज में मनमाने नियम बनाए ! वह लोगो को धर्म और पाप का समय दिखाकर नियमो का पालन करवाता था ! महिलाओं को भी न्याय नही मिला, उन्होंने शिक्षा,धन, स्वतंत्रता, समानता और सम्मान का कोई अधिकार नही था ! और शुद्र इन अधिकारों से वंचित थे !

समाज में बाल विवाह की प्रथा थी , ऐसे समय में सावित्रीबाई का बाल विवाह 1840 में ज्योतिबा फूले के साथ हुआ ! सावित्री बाई फुले की जीवन की यह एक महत्वपूर्ण घटना थी ,उस समय किसी को कम ही पता था कि सावित्रीबाई फुले ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर क्रांति की महान ज्वाला बनेगी ! परिणाम स्वरूप दंपति ने अपने सारे सुख सुविधाओ का त्याग कर स्वयं को समाज सेवा के कार्यों में समर्पित कर दिया !

सावित्रीबाई फुले ने अपने पति से पढ़ना लिखना सीखा और कड़ी मेहनत करके अपनी शिक्षा पूरी की । स्वयं अध्यापिका बनने के बाद अपने पति एवं स्वयं के प्रयासों से बच्चो और महिलाओं को अध्यापिका बनाना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया साथ ही विधवा विवाह के कारण समाज की कुरीतियां एवं अन्याय को दूर करने के लिए निरंतर संघर्ष करती रही...उन्होंने अवैध शिशु हत्या को रोकने के लिए अनाथालय की स्थापना की। समानतावादी , मानवतावादी विचारो का समाज में व्यापक प्रसार प्रचार किया। अकाल और महामारी के दौरान रोगी पीड़ितो की सेवा कर सावित्री बाई ने खुद को बेहद मेहनती दृढ़ निश्चयि और परोपकारी महिला साबित किया। महिलाए धर्मभीरू (धार्मिक कायर) ,धर्मांद और परंपरावादी (रूढ़िवादी) है। उन्होंने अपने कार्यों से इसे गलत साबित कर दिया।

2.सावित्रीबाई फुले का जन्म

भारतवर्ष में इतिहास लेखन का कार्य सदैव ब्राह्मणों के हाथ में रहा है, वे जाति और जाति के स्वार्थ से जातिगत होकर एकतरफा इतिहास लिखते रहे हैं। उन्होंने अपनी ही जाति के अतीत के चरित्रों को नायक बनाकर पेश किया है, जबकि शूद्रों, अस्पृश्यों के महान वीरों ने उपेक्षित होकर उनके इतिहास को घाटी में धकेल कर नष्ट करने का काम किया है। ऐसे अनेक उपेक्षित पात्रों में से एक हैं फुले दंपत्ति ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले ऐसे युगल थे जिन्होंने महा करुणामयी भगवान बुद्ध की तरह न केवल देश के दलितों और अस्पृश्यों की सहायता की अपितु निःस्वार्थ भाव से अपने समाज के कट्टर शत्रुओं का उद्धार भी किया। सेवाएं।

सावित्रीबाई का जन्म 3 जनवरी 1831 को दक्षिणी महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगाम नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवेसी पाटिल और माता का नाम लक्ष्मीबाई था।सावित्रीबाई के तीन भाई थे जिनका नाम सिंधुजी, सखाराम और श्रीपति था। नेव्स पाटिल पेशवा प्रतिष्ठित कुलों से ताल्लुक रखते थे। 18वीं शताब्दी में, नेवेस टेकेकरों को पूर्ण माली समाज का प्रमुख कबीला माना जाता था। माली जाति के अंतर्गत कुशवाहा, कच्छी, शाक्य, मौर्य आदि जातियाँ आती थीं। जिन्हें अब पता चल गया है कि ये जातियां भगवान बुद्ध, महाराजा बिंबिसार और सम्राट अशोक जैसे प्रतापी महापुरुषों की संतानें हैं। ये सभी जातियाँ अतीत में बौद्ध थीं। ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र श्रृंग द्वारा अंतिम बौद्ध सम्राट बुहदर्श मौर्य की हत्या और बौद्धों के नरसंहार ने बौद्धों को शुक्र या अद्भुत बने रहने के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन अब नए शोधों ने जांच के आधार पर सच्चाई का खुलासा किया है, अंत में सभी शूद्रों और अछूतों को शाक्य कहा है।

3.सावित्रीबाई फुले का वैवाहिक जीवन:

सावित्रीबाई केवल नौ साल की थीं और ज्योतिबा फुले 13 साल की थीं जब सावित्रीबाई का ज्योतिबा फुले के साथ विवाह 1840 ईस्वी के शुभ दिन नैगाम में बड़ी धूमधाम से किया गया था। दो साल बाद सावित्रीबाई अपने ससुराल आगईं। घर में ननन्द सगुणाबाई उनके निकट ही थीं। दोनों सिद्ध बहनें बन गईं। ज्योतिबा अपनी छोटी बहूसे अधिक प्रेम करतेथे। सावित्री अपने सरल स्वभाव से घर में सभी का दिल जीत लेती है क्योंकि वे कई बार लड़कपन की आंधी में आ जाते हैं, फिर दोनों के बीच झगड़ा होता है और जल्द ही एक हो जाते हैं। धीरे- धीरे ज्योतिबा फुले और सावित्री एक दूसरे के पूरक बन गए। पति- पत्नी की दोस्ती का ऐसा उदाहरण बहुत कम देखने को मिलता है। फुले दंपतिने वंचितों और शोषितों के जीवन में प्रकाश लाने के लिए शिक्षा का प्रसार शुरू किया। दोनों का लक्ष्य एक ही था। दोनोंने एक- दूसरे के साथ ताल मेल बिठा कर मुश्किलों का सामना किया। एक आदर्श पति- पत्नी के मानदंड स्थापित किए। इनकी शादीशुदा जिंदगी विवाहितो के लिए एक बेहतरीन मिसाल होती है। उन्होंने भारत के वंचितों और शोषितों के लिए शिक्षा की शुरुआत की। वास्तव में, फुले दंपति वंचितों, शोषितों और अछूतों के लिए शिक्षाकी भावना जगाने में अग्रणी थे। फुले दंपतिकी अपनी कोई संतान नहीं थी लेकिन उपेक्षित और अछूत बच्चोंको अपना कोमल प्यार देनेमें कोई कसर नहीं छोड़ी। सावित्रीकी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही यह कार्य संभव हो पाया था, ज्योतिबाने एक बार कहा था कि मैं जो कुछ भी कर पाया हूं वह अपनी पत्नी के सहयोग के कारण ही कर पाया हूं। सावित्रीबाई जीवनभर अपने पतिके पद चिन्हों पर चलती रहीं लेकिन उनकी मृत्यु के बाद भी वे उनके लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहीं,जो उन्होंने मिलकर तय किया था।

4.सावित्री बाई फुले की शिक्षा:

जब सावित्री बाई फुले की शादी हुई थी उस समय तक वे पढ़ी लिखी नही थी। शादी के बाद ज्योतिबा ने उन्हें पढ़ना लिखना सीखाया था। वही उन दिनों मैं लड़कियों की दशा बेहद दयनीय थी यह तक उन्हें शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी। वही सावित्री बाई को शिक्षित करने के दौरान ज्योतिबा को काफी विरोध का सामना करना पड़ा था। यह तक की उन्हें उनके पिता ने रूढ़िवादिता और समाज के डर से घर से बाहर निकल दिया फिर भी ज्योतिबा ने सावित्री बाई को पढ़ना नहींछोड़ा और उनका एडमिशन एक प्रशिक्षित स्कूल में करवाया। इस तरह सावित्रीबाई ने अपनी पढ़ाई पूरी की।

5 सामाजिक प्रवृतियां:

5.1 विद्यालय की स्थापना:

5 सितंबर 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ मिलकर उन्होंने महिलाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। एक वर्ष में सावित्रीबाई और महात्मा ज्योतिबा फुले पांच नए विद्यालय खोलने में सफल हुए। तत्कालीन सरकार ने इन्हे सम्मानित भी किया। इस तरह सावित्रीबाई फुले प्रिंसिपाल बनी। एल महिला प्रिंसीपाल के लिए सन 1848 में बालिका विद्यालय चलाना कितना मुश्किल रहा होगा , इसकी कल्पना शायद आज भी नही की जा सकती। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। सावित्रीबाई फुले उस दौर में न सिर्फ खुद पढ़ी बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने का भी बंदोस्त किया।

5.2 समाजद्वारा अत्यधिक विरोध

सावित्रीबाई फुले की वीरता और उत्साह की प्रशंसासे अधिक निंदक थे। क्योंकि बहुत कम लोग उनके काम की अहमियत को समझ पाते हैं। इसलिए उनका स्कूल कुछ लोगोंके लिए चर्चा का विषय बन गया। उनका स्कूल जाना कुछ लोगों के लिए क्रोध और दूसरों के लिए निंदा का स्रोत था। 1848 में जब यह स्कूल खुला तो सावित्रीबाई की उम्र 17 साल थी। उस जमाने में यह कल्पना भी नहीं की जाती थी कि महिलाएं अंधेरे से बाहर आजाएंगी, स्कूल टीचर बनना तो दूर की बात थी, घर का काम करना, खाना बनाना, शादी करना, घर बनाना, बच्चों को पालना, पति को पीटकर आंसू बहाना आदि। महिलाओंके पास केवल एक ही धर्म रह गया था। इसलिए जब सावित्रीबाई स्कूल जाती थी तो लोग उन्हें ताने मारते थे, कोई कहता था शूद्र स्त्री है तो घूंघट से बाहर चली जाती थी, कोई कहता था कि उसके पास दो बागडोर हैं। इस काम में शूद्र महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं। दो-चार की टोली में शामिल होकर मन ही मन सुनतीथी। नमस्ते! देखो, रे घर छोड़कर मटकी मटकी पढ़ाने जाती है और उसका पति जो पहले बड़ा पगड़ी है अब उसकी कमाई खाएगा। जो स्त्रियाँ स्वयं बैलों की भाँति दिन- रात गृहकार्य में लगी रहती थीं, उन्हें भी वैक्सिंग और आलिंगन में सुख प्राप्त होता था। सावित्रीबाई फुले इन महिलाओंकी तरह नहीं थीं, वे शिक्षित, साहसी, कर्तव्य निष्ठ और हमेशा अपने रास्ते पर चलनेवाली थीं। सावित्रीबाई को हमेशा ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा। धीरे-धीरे परिस्थितियोंने उन्हें लड़ने की ताकत दी। ऐसा देखने में आता है कि सावित्रीबाई फुलेने अजीबोगरीब और अलग-अलग परिस्थितियों का सामना करके और संघर्ष करके अपने लक्ष्य को हासिल किया।

5.3 संघर्षों के बाद महिला शिक्षा की मुहिम:

सावित्रीबाई ने काफी संघर्षों के बाद 1 जनवरी 1848 से लेकर 15 मार्च 1852 के बीच अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ बिना किसी आर्थिक मदद से ज्यादा से ज्यादा लड़कियों को शिक्षित करने के मकसद से 18 स्कूल खोले। वही इन शिक्षा के केंद्र के से एक 1849 में पूना में ही उस्मान शेख के घर पर मुस्लिम स्त्रियों और बच्चो के लिए स्कूल खोला था। इस तरह वे लगातार महिलाओं को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए काम करती रही। वही शिक्षा के क्षेत्र में सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले के महत्व पर। योगदान को देखते हुए ब्रिटिश सरकार के शिक्षा विभाग ने उन्हें 16 नवम्बर 1852 को उन्हें शॉल भेंटकर सम्मानित भी किया।

5.4 दलित उत्थान की प्रवृत्तियां:

महिलाओं के हित के बारे में सोचने वाली और समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने वाली महान समाज सुधारीका सावित्रीबाई ने दलित वर्ग के उत्थान के लिए भी कई महत्व पूर्ण काम किए ! उन्होंने समाज के हित के लिए कई अभियान चलाए। वही समाज के हित में करने वाले उनके पति ज्योतिबा फुले ने 24 सितंबर 1873 में अपने अनुयायियों के साथ " सत्य शोधक समाज " नामक एक संस्था का निर्माण किया। जिसके अध्यक्ष वह ज्योतिबा फुले खुद रहे जबकि इसकी महिला प्रमुख सावित्रीबाई फुले को बनाया गया था। इस संस्था को स्थापना करने का मुख्य उद्देश्य शुद्रों और अतिशुद्रो को उच्च जातियों के शोषण और अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर उनका विकास करना था ताकि वे अपनी सफल जिंदगी व्यतीत कर सके। इस तरह महिलाओं और शूद्रो के लिए शिक्षा का द्वार खोलने वाली सावित्रीबाई ने अपने पति महात्मा ज्योतिबा फुले के हर काम में कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया था।

सावित्रीबाई फुले कहा करती थी -

" SIT IDLE NO MORE, GO, GET, EDUCATION "

5.5 ब्राह्मण विधर्म का घोर विरोध:

महात्मा ज्योतिबा फुले और क्रान्तिकारी सावित्रीबाई फुले मेधावी थे, उनमें उत्कृष्ट तर्क शक्ति थी। वह अपने समाज के लाभ के लिए कोई भी जोखिम उठाता था। सावित्रीबाई फुले और उनके महान पति ज्योतिबा फुले, अगर किसी ने भगवान बुद्ध के बाद की ब्राह्मणवादी व्यवस्था की कपटपूर्णता और देश में शोषित जनता की पीड़ा को समझने का काम किया है। इन दोनों ने बहुत पहले ही ब्राह्मण विधर्म और उसकी अमानवीय व्यवस्था को खारिज कर दिया था। उन्होंने दलित महिलाओं और बहुजन समुदाय को ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की। जब ब्राह्मणों को इस बात का पता चला तो उन्होंने सत्यशोधक समाज और उसकी गतिविधियों का कड़ा विरोध करना शुरू कर दिया। इसलिए फुले दंपत्ति ने पुरोहितों के महत्व को नकारने का आदेश दिया। वह लोगों से पूछ रहा था कि यह पूजा प्रार्थना किसके लिए है? क्या परमेश्वर आपकी भाषा में की गई प्रार्थना को समझेगा?

सावित्रीबाई फुले ने ब्राह्मणों द्वारा स्थापित आस्तिकतावाद, आत्मावाद, परमात्मावाद, अवतारवाद, पुनर्जन्मवाद को पूरी तरह से फेंक दिया। वह इन सब को ब्राह्मणों द्वारा बहुजन समाज के शोषण का साधन मानती थीं, उन्हें मूर्ति पूजा और ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले श्राद्ध आदि संस्कारों में भी कोई आस्था नहीं थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि वे ब्राह्मणवाद, प्राणसमाज और आर्य समाज के सभी वेदों और उपनिषदों के गुलाम थे। सावित्रीबाई फुले ने वेदों और उपनिषदों की सत्ता को कतई स्वीकार नहीं किया, दरअसल सावित्रीबाई फुले और उनके पति महात्मा ज्योतिबा फुले न केवल ब्राह्मणवाद के विरोधी थे, बल्कि ये दोनों ही वेदों और वेदांत के घोर विरोधी भी थे।

5.6 दुष्काल के दरमीयान सेवा कार्य की प्रवृति:

ई.वी.1876/77 में महाराष्ट्र में भयंकर सूखा पड़ा और खाने-पीने का सारा सामान गायब हो गया। लोग भूखे मरने लगे। जमाखोरों ने अपने गोदामों को बंद कर दिया और जनता पर प्रदर्शित करने के लिए बहुत कम सामग्री का आरोप लगाया। हजारों लोग बिना अनाज के मरने लगे। हर तरफ भूखे लोग अपनी आखिरी सांसे गिन रहे थे। यह देखकर फुले दम्पत्ति के हृदय में शोक छा गया। उन्होंने ऐसे क्लेश काल में सत्यशोधक समाज की ओर से हर जगह मुफ्त भोजन बेचने का काम शुरू किया। दो हजार बेसहारा बच्चों के लिए एक ही जगह भोजन की व्यवस्था की। युगल के उत्साह, साहस और परोपकार से प्रभावित होकर सभी मित्र भी इस कार्य में सहयोग देने लगे।

जनता का अपार समर्थन देख ज्योतिबा फुले ने सबके सामने रखा कि जमाखोरों और कालाबाजारियों ने गोदामों में लाखों का अनाज रख रखा है और लोग बाहर भूख से मर रहे हैं. यह सभी लोग समझ गए थे, जो सोचते थे कि जमाखोरी को समाप्त किए बिना अकाल से नहीं लड़ा जा सकता। तब लोगों का एक समूह पूना के तत्कालीन मजिस्ट्रेट के पास गया और जमाकर्ताओं का माल जब्त करने को कहा। अत्यधिक भीड़ को देखकर मजिस्ट्रेट को जमाकर्ताओं का सामान जब्त करना पड़ा। इस प्रकार दंपत्ति ने जनता के समर्थन से सूखे का सामना किया। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई की सेवा भावना को देखकर पुणे के लोगों को इन दोनों पर काफी विश्वास हुआ और जनता ने इन पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। सावित्रीबाई पाले ने अनपढ़ों को शिक्षित करने और शोषण, दमन और अत्याचार का विरोध करने के लिए प्रेरित किया

6.सावित्रीबाई फुले का अवसान:

ज्योतिबा की असामयिक मृत्यु के बाद नवजागृत समाज पर विधर्मी महंतों की काली छाया फिर से पड़ने का भय था। लेकिन सावित्रीबाई ने अपने महान पति ज्योतिबा फुले के अधूरे कार्यों को अपने सर्वोत्तम प्रयासों से पूरा करते हुए उस जिम्मेदारी को कुशलता से निभाया। सावित्री ने संकल्प सिद्धि के लिए अथक परिश्रम किया। समाज सेवा करने के फलस्वरूप सफलता उनके कदम चूमने लगी। 66 वर्ष की आयु में भी सावित्रीबाई को एक क्षण के लिए भी विश्राम करने की मनाही थी। उन्होंने प्लेग के सबसे बुरे दौर में खुद को बीमारों की सेवा में समर्पित कर दिया। जाति के आधार पर ब्राह्मणों द्वारा जीवन भर प्रताड़ित किए

जाने के बावजूद वे दिन-रात बीमारों की सेवा में लगी रहीं, उदारवादी सावित्रीबाई ने प्लेग के दौरान दिन-रात बिना जाति के भेदभाव के अछूतों और उच्च जाति के रोगियों की समान रूप से सेवा की। निरन्तर सेवा कार्यों से थकी सावित्रीबाई का स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बिगड़ने लगा, वे बीमार रहने लगीं, उनका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बिगड़ने लगा, वे बिस्तर पर रहने लगीं, इस समाचार से उन्हें देखने और उनसे मिलने के लिए लोगों की लंबी कतारें लगने लगीं। जीवन भर दूसरों की भलाई के लिए संघर्ष करने वाली सावित्रीबाई हर दिन अपने घर के सामने धरना देती रहीं और अंत में मृत्यु से नहीं लड़ सकीं और 10 मार्च 1897 को 66 वर्ष दो माह सात दिन की आयु में अपने जीवन की ज्वाला से जल उठीं। अनन्त ज्वाला में लीन हो गया।

कहा जाता है कि सावित्रीबाई प्लेग की शिकार थीं। उनकी मृत्यु से सारा समाज शोक के अथाह सागर में डूब गया और सभी के दिलों पर अपनी करुणा की छाप छोड़ने वाली तेजस्वी महिला, समाज की महान कर्जदार ने सभी को रुला कर छोड़ दिया।

सावित्रीबाई फुले ने देश में अपने क्रांतिकारी समाज सुधार कार्यों द्वारा राष्ट्र के लिए एक महान आदर्श स्थापित किया। उनका जीवन एक जलती हुई मशाल है जिसके दिव्य प्रकाश में भारतीय नारी ने सर्वप्रथम समाज में सम्मान के साथ जीना सीखा और दूसरों के लिए मशाल बन गई। सावित्रीबाई की महान कर्मों ने भारतीय नारी के चरणों में अनादि काल से रखी स्वतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ा। सावित्रीबाई के अदम्य उद्यम और महान कार्यों का ही परिणाम है कि आज भारतीय नारी स्वतंत्र रूप से खुली हवा में सांस ले पा रही है और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है।

7. मूल्यांकन:

भारत में विदेशी यूरेशियन आर्य ब्राह्मणों के आने से पहले, सिंधु घाटी सभ्यता में पुरुष और महिलाएं समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, प्रेम, करुणा और बिना जाति के अपने जीवन शैली में प्रकृति की पूजा करते हुए खुशी से रहते थे। लेकिन विदेशी आर्यों ने घुसपैठ और छल-कपट कर सत्ता हासिल की, देशी भारतीयों को 6743 जातियों और उप-जातियों में बांट दिया, सत्ता, धन और शिक्षा के हथियारों को हड़प लिया और उनका भरपूर शोषण किया और उन्हें नरक से भी बदतर जीवन जीने पर मजबूर कर दिया।

लेकिन समय-समय पर ब्राह्मणों के इवरवाद, काल्पनिक देवी-देवताओं, काल्पनिक धार्मिक ग्रंथों की आड़ में अपने सम्मान, सम्मान और स्वतंत्रता के लिए अत्यधिक संघर्ष करने वाली देशी महिलाओं में भी मूलनिवासियों को शूद्र, अति-शूद्र, का उल्लंघन करते हुए वर्गीकृत किया गया था। प्राकृतिक सिद्धांत और नियम और जातिवाद पैदा करना, जिसके खिलाफ नैतिकता, ईमानदारी ने कदम बढ़ाया। जो अशिक्षित थी लेकिन उसके पति ने उसे शिक्षा दी और अपने पति के साथ जिसने अपने जीवन की परवाह किए बिना भारत की सभी महिलाओं के सम्मान, सम्मान, स्वतंत्रता और समानता के साथ जीने के अधिकार के लिए अथक संघर्ष किया और नए जोश, साहस का निर्माण करने के लिए अथक प्रयास किया। और महिलाओं में विश्वास।

भारत की ऐसी ही स्वदेशी महिलाओं में सावित्रीबाई के अलावा माता रमाबाई अंबेडकर, जलकरीबाई, फूलादेवी और कई अनाम महिलाओं ने संघर्ष कर नई दिशा दिखाई है। अतः मूलनिवासी महिलाओं को इस पुस्तक को खुले दिमाग से पढ़ना चाहिए और सावित्रीबाई को अपना आदर्श मानना चाहिए, अपने परिवार और अन्य लोगों को उनके द्वारा बताए गए अन्याय दमन और शोषण का सामना करने के लिए संगठित करना चाहिए और ब्राह्मणवादी वातावरण से मुक्त होकर एक शुद्ध, पवित्र सिद्धांतों का निर्माण करना चाहिए। , कल्याणकारी, प्रगतिशील जीवन और अपने देश को दुनिया के अन्य देशों की महिलाओं के बराबर बनाना है क्योंकि शिक्षित उन्हें बचाने के लिए आगे आते हैं। वर्तमान में हमारा पिछड़ा वर्ग ओबीसी, एसटी, एससी महिलाऔर पुरुषों ने अधिक से अधिक अशिक्षित और अंधविश्वासी लोगों के दिलो-दिमाग पर जो पटरियाँ बाँधी हैं, उन्हें हटाकर जो उभरती हुई पीढ़ी जागरूक होगी, वह सावित्रीबाई के बलिदान का सम्मान करने वाली मानी जाएगी, जो मानव मन में संस्कार भरकर देश को गौरवान्वित करेगी। मर्यादा, सभ्यता और संस्कार... उसे जगाओ और सही रास्ता दिखाओ और देश को गौरवान्वित करो।

माता सावित्रीबाई फुले, माता रमाबाई अम्बेडकर जिन्होंने जीवन भर जातिवाद, रूढ़िवादिता के खिलाफ लड़ाई लड़ी और अपने स्वास्थ्य को जोखिम में डाले बिना अपने पति की विचारधारा का समर्थन और समर्पण किया।

***संदर्भ सूची:**

1. शांति स्वरूप बौद्ध सम्यक प्रकाशन न्यू दिल्ली - माता सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले की जीवन गाथा,प्रथम आवृति,गौतम बुध विहार, पंचशील संकुल, सुगम सोसायटी, राजकोट - 360001, 2020.

2.सविता कुलकर्णी, साध्वी सावित्रीबाई फुले भारतीय स्त्रीशक्तीची आदय उदगाती, भारतीय विचार साधना

3.Maharashtra State Sahitya Ani Sanskrit Mandal (महाराष्ट्र स्टेट साहित्य आणि संस्कृती मंडळ),101, Ravindra Natya Mandir, 2nd Floor, Sayani Rd, Prabhadevi, Mumbai, Maharashtra 400025.

4.B.R. Mani & P Sardar, (Ed.) (2008), A Forgotten Liberator , the life and struggleof Savitribai Phule, Mountain Peak, New Delhi.

5.B.R. Mani & P Sardar, (Ed.) (2008), A Forgotten Liberator , the life and struggle of Savitribai Phule, Mountain Peak, New Delhi.

6.Chakravarti, U. (April 1993), Concenptualizing Brahmanical Patriarchy in 32 Journal of Uttarakhand Academy of Administration Nainital (JUAAN) Early India: Gender Caste, Class and State, Economic and Political Weekly, Vol. 28 (14), pp. 579–85.

7.Chakrawarti, U. (2000), Rewriting history; the life and times of Pandita Ramabai, Kali for women, India.

8.Dhara, Lalitha, (Ed.), (2011), Phule's and Woman's Question, Dr. Ambedkar college of Commerce and Economics, Mumbai.

9.Dhara, Lalitha, (Ed.), (2012), Kavya Phule, Dr. Ambedkar college of Commerce and Economics, Mumbai.

10.Guthrie, W.K.C., (1967), The Greek Philosophers From Thales to Aristotle,' Methuen and Co. Ltd., London.

11.Keer, D, (1997), Mahatma JotiraoPhooley, Father of the Indian social revolution, Popular Prakashan, Mumbai.

12.Malik-Goure, Archana, (2013), Jyotiba Phule: A Modern Indian Philosopher, Suryodaya Publication, New Delhi. IRA-International Journal of Management & Social Sciences 589.

13.Mali, M.G., (2006), Savitribai Phule-SamagraVangamaya, Maharashtra Rajya Sahitya Sanskriti Mandal, Mumbai.

14.Phadke, Y.D. Editor, (1991), Mahatma Phule SamagraVangmaya, Publisher Maharashtra Rajya Sahitya and Sanskruti Mandal, Mumbai.

15.Omvedit, G, (Ed), (2002), Jyotiba Phule Ani StreeMuktichaVichar, Lokvangmay group, Mumbai.

16.Rao, A. (Ed.), (2003), "Gender and Caste, series Issues in Contemporary Feminism, Kali for Women", New Delhi.